SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में ग्राम्य जीवन

संगीता पाण्डेय, हिंदी विभाग,
होली क्रॉस वीमेंस कॉलेज, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
संगीता पाण्डेय, हिंदी विभाग,
होली क्रॉस वीमेंस कॉलेज, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/09/2020
Revised on : -----
Accepted on : 28/09/2020
Plagiarism : 01% on 24/09/2020

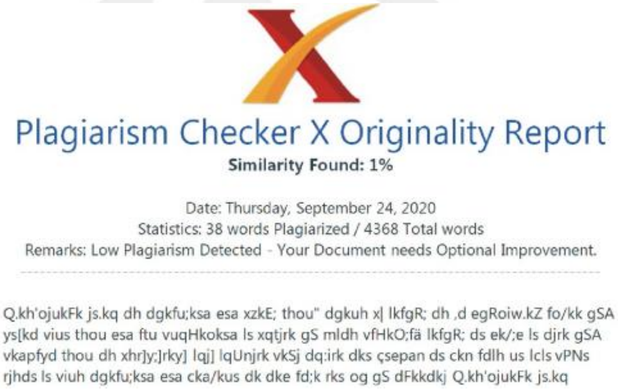

शोध सार

कहानी गद्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। लेखक अपने जीवन में जिन अनुभवों से गुजरता है उसकी अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से करता है। आंचलिक जीवन की गीत, लय, ताल, सुर, सुन्दरता और कुरूपता को प्रेमचंद के बाद किसी ने सबसे अच्छे तरीके से अपनी कहानियों में बांधने का काम किया तो वह है कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु। वहीं रेणु जिसकी रचना में खेतखलिहान, चौपाल, पनघट के रास्ते, बैल, जोहड़ लकड़ी, पीपल के पेड़ो के पत्तो की खड़खड़ाहट खेतों में उगती भूख उस भूख के लिये जलता चूल्हा, उस चूल्हे पर सिकती रोटी सब कुछ देखनों की मिलती है। हम जब भी रेणु जी कोई भी रचना पढ़ते हैं लगता है कि जैसे कोई लोकगीत गाया जा रहा हो जिसे सुनकर या पढ़कर आंखो के सामने ग्रामीण जीवन का चलचित्र उपस्थित हो जाता हैं। रेणुजी की कहानियों के पात्रों में एक विशिष्ट इच्छा शक्ति देखने को मिलती है। आपके के पात्र गरीबी, अभाव भूखमरी प्राकृतिक आपदाओं से जूझते हुये मर तो सकते हैं पर परिस्थितियों के आगे हार नहीं मानते।

मुख्य शब्द

लोक गीत, अभिव्यक्ति, साहित्य, ग्रामीण जीवन।

रेणु की लगभग पैंसठ कहानियां प्रकाशित हैं। रेणुजी के जीवन काल में ही तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके थे। इन संग्रहों के बाहर भी कहानियां थी जिनका संकलन भी किया गया। रेणुजी के जीवन काल में तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुये :

1. ठुमरी 1958।
2. आदिम रात्रि की महक 1967।
3. अग्निखोर 1973।

1973 में प्रकाशित मेरी 'प्रिय कहानियां' और राजेन्द्र

यादव द्वारा सम्पादित 'रेणु की श्रेष्ठ कहानियां' नामक दो संग्रह निकल चुके हैं। रेणु जी मृत्यु के उपरान्त उनकी अप्रकाशित तथा कई पत्र– पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों के दो संग्रह निकले हैं :

1. एक श्रावणी दोपहरी की धूप 1984.
2. अच्छे आदमी 1986.

आंचलिक कथा नई कहानी के साथ साथ एक सशक्त प्रवृत्ति के रूप में प्रायः सामने आई। इस दौर में कहानियों में ग्रामीण जीवन का अंकन होने लगा। उस काल में शहरी जीवन की कहानियों की तुलना में ग्रामीण जीवन की कहानियां बहुत कम लिखी जाती थी अतः ग्रामीण वातावरण की कहानियों ने एक नई स्फूर्ती दी। अंचल विशेष की बात होने के कारण इन कहानियों को आंचलिक कहा जाने लगा जैसे–'मारे गए गुलफाम', 'रसप्रिया', 'पंचलाइट', 'लाल पान की बेगम','संवदिया'।

नई कहानी ने जीवन के विस्तार तथा उसकी गहराई को शब्दबद्ध करने का कार्य किया है, यही कार्य आंचलिक कहानियों में स्पष्ट होता है। आंचलिक कहानियों में ग्रामीण संस्कृति का अंतरस्पन्दन सुनाई पड़ता है। इन कहानियों में स्वतंत्रोत्तर युग की परिवर्तित गांवों की स्थितियां तथा वहां की समस्याओं का चित्रण प्राप्त है।

रेणु जी एक सजग कथाकार है उन्होंने अपने चिरपरिचित ग्राम्यांचल को कथा का आधार बनाया। रेणु का आगमन एक नई प्रवृत्ति की सान्दर्भिकता का सूचक है। हिन्दी कहानी में रेणु ने इसी के लिए आधुनिक पृष्ठभूमि दी है। गावों के साथ रेणु की इतनी आत्मीयता थी कि उनका कोई अलग अस्तित्व ही नही था वे गॉवों के साथ तादात्मय प्राप्त करते दिखाई पड़ते है।

रेणु की कहानियां एक सच्चे ग्रामीण व्यक्ति की आत्मीय अभिव्यक्ति है। गांव के नये जीवन परिवेश से लेकर ग्रामीण परिस्थितियों तक का तथा पारंपरिकताओं में रमी मानसिकता से लेकर कुछ ऐसे व्यक्ति चित्रों तक का विपुल आयाम भी इन का है। इस अर्थ में रेणु की रचनायें स्वातंर्योत्तर ग्रामीण जीवन की विस्तृत रंगस्थली है।

रेणु की कहानियों में गाँवों में नजर आ रहे सभी बदलाव दिखाई देते है। औद्योगिकीकरण और नगरों विकास के कारण गांवो का शहरों की ओर आकर्षण तथा पलायन दिखाई देता है। पलायन करने वालों के लिये परामर्श रेणु की कहानियों में मिलता है। पलायन संबंधी विचार उनकी कहानी ''जहां पमन को गमन नहीं'' शीर्षक कहानी में इस अवस्था को रेणु जी ने भावुक दृष्टि से देखा है तभी तो उन्हें लिखना पड़ा – ''मेरे गांव में कोई दुअछर लिख लेता है वह गांव छोड़कर बिदा हो जाता है।''यही बात ''विघटन के क्षण'' नामक कहानी में 'शिकायत के रूप में प्रकट हुई है– ''गांव के जवान जहान लड़के गांव छोड़कर भाग रहें हैं। पता नहीं शहर के पानी में क्या है? कि जो एक बार एक घूंट भी पी लेता है, फिर गांव का पानी हजम नहीं होता।'' इसी कहानी के दूसरे संदर्भ में शहर जाने वाले जवानों की मजबूरी की ओर रेणु ने संकेत किया है–''पांच रूपये रोज की कमाई यहां किस काम में होगी भला?'' रेणुजी की ग्रामीण मोह की भावुक कहानी विजया नामक पात्र के माध्यम से चिन्हित हुई है यह कहानी अलग ही स्तर की है। इस कहानी की नायिका विजया सब छोड़छाड़ कर गांव वापस आती है। गांव की चुरमुनिया नामक आठ सौ साल की लड़की विजया को बहुत प्यार करती है। अपनी प्यारी विजया दी के गांव में लौट आने के लिये बेचारी चुरमुनिया घर के देवता–पितर, गांव के देवता से मनोती करती है।

दो वर्ष पटना में रिक्शा डेलिवरी का काम करके लौटने वाला रामविलास फिर शहर न लौंटने का निर्णय कर लेता है उसके अनुसार – ''............ घर की आधी रोटी भली। शहर में क्या है? जितनी आमदनी होती है उससे चौगुना लठू खर्च होता है। गांव आखिर गांव है। मिसर जी ने बाकि करजे का एक पाई भी सूद नहीं लिया। शहर में इस तरह कोई सूद छोड़ा होता? पटना कहो या दिल्ली जो मजा अपने गांव में है, वह इन्द्रासन में भी नही।''

इस प्रकार दोनों अवस्थाओं का चित्रण रेणु ने किया है। रेणु ने कुछ कहानियों में गांव में हो रहे आर्थिक शोषण का चित्रण किया है। इसके अंतर्गत गरीब किसानों पर किया जाने वाले कई प्रकार के शोषण है। प्रायः गांवों में इस प्रकार के शोषण पर समझौतावादी रवैया अपनाया जाता है।'' सिर पंचमी का सगुन'' नामक कहानी में हमें शोषण का संदर्भ हमें प्राप्त होता है। गांव के चार पांच हल जोतने वाले किसानों से अच्छी अवस्था है काल कमार की

बड़े–बड़े किसान भी बेर बखत पड़ने पर उससे कर्ज ले जाते हैं कागज बनाकर। ऐसी हालत में कालु सिंघाय नामक किसान से पिछले पांच साल से खैन ना मिला था बदले में ''कालू ने जाने कितनी बार बेगार करवायी है। दूध, कबूतर, केले, साग सब्जी का दाम कभी कालू या उसकी बीबी ने नहीं दिया। कालू के लड़कों ने कितनी बार उससे पेड़ कटवाया है। इतने पर भी आज सिंर पंचमी के दिन कालू ने सिंघाय का फाल टेढ़ा कर दिया है खैन के बाकी के नाम पर। जहां थोड़ा सा अधिकार या सम्पत्ति आ जाती है वहां उसका दुरूपयोग होता है, शोषण शुरू होता है बड़े किसान अपनी हालात सुधरते ही छोंटों पर अत्याचार करना शुरू कर देते हैं।

कोसी मैया में बाढ़ के आने पर गांव वाले वंदना अवश्य शुरू करते है लेकिन बाढ़ की विभीषिका के सामने उनका जीवन तुच्छ है उन्हें अपनी जान हथेली पर लेकर भागना पड़ता है। किसी ऊँची जगह में जाना पड़ता है जहां बाढ़ का पानी पहुंच सके। सरकार की ओर से दिये जा रहे रिलिफ कार्यक्रम का वर्णन रेणुजी ने ''पुरानी कहानी नया पाठ'' में दिया है :

''तीस बत्तीस दिन तक अपनी अपनी जान के लिए वे आपस में लड़ते रहे स्वार्थ सिद्धि के लिये उन्होंने एक दूसरे की गरदन पर हाथ रखे दूसरे का हिस्सा हड़पा, चोरी की, झगड़ा किया। सभी के दिल में शैतान का डेरा था।''

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विस्थापित लोग भारत के कई गांवों में बस गये। इनका गांवों में बसना भी ग्रामीण जीवन में कई परिवर्तन ले आया। सरकार की ओर से मिलने वाली सहायता से वे असंतृप्त हैं। इन विस्थापितों को सहायता मिलती देखकर स्थानीय ईष्यालु हो उठतें हैं फलस्वरूप मनमुटाव बना रहता है। इसका वर्णन रेणुजी ने अपनी कहानी '' रोमांस शून्य प्रेम कथा की भूमिका'' में दिया है। उस ने कहा ''गांव के लोग दस साल से चिल्ला रहे हैं। स्कूल स्कूल मगर स्कूल के नाम पर एक चटसाल भी नहीं खुला, अब उधर देखिये पाखिस्थानियों सब को आये छः महीने भी नहीं हुये मिडिल स्कूल खोलने का औडर पास हो गया सभी ने एक ही साथ आवाज से कहा–क्या–आ––आ––आ––स्कु––उ––उ––ल––ल? पाखिस्तानियाँ टोला में।''

गांवों का बदलना, चाहे वह जिस किसी स्तर का हो, स्वाभाविक है। पुरानी मान्यताएं बदल रही है पुरानी आस्थाएं टूट रही है इस से सबंधित कहानियां भी रेणुजी ने लिखी है। पुराने जमाने में समाज में कला एवं कलाकारों का सम्मानीय स्थान था लेकिन आज हालात बदल गये हैं। नृत्य मंडलियों और गीत गानों को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है उनकी परवाह कोई नहीं करता। यह एक ग्रामीण यथार्थ ही है इसके कुछ संकेत 'रसप्रिया' कहानी में मिलते हैं पंचकौडी मृदंगिया के शब्दों में पुरानी आस्था के टूटने से जो वेदना उमड़ती है उसका संकेत हमें मिलता है। मिरदंगिया कहता है– ''जेठ की चढ़ती दोपहरी में खेतों में काम करने वाले भी अब गीत नहीं गाते। कुछ दिनों के बाद कोयल भी कूकना भूल जायेगी क्या? ऐसी दोपहरी में चुपचाप कैसे काम किया जाता है। .... पन्द्रह बीस साल पहले तक विद्यापति नाम की थोड़ी पूछ हो जाती थी। शादी ब्याह, यज्ञ–उपनयन, मुंडन कनछेदन आदि शुभकार्यो के लिये विदपतिया मंडली की बुलाहट होती थी। पंचकौडी मिरदंगिया की मंडली ने सहरसा और पूर्णिया जिले में काफी यश कमाया था। इस कहानी में रेणुजी ने ग्राम्य जीवन तथा उसके सामाजिक संदर्भ को रेखांकित किया था।

सामाजिक परिवर्तन की बुनियाद में आर्थिक स्थिति मुख्य होता है। समय बदलने के साथ ग्रामीणों की स्थिति कहीं सुधरी है और कहीं जैसी तैसी रह गई है।इसका उदाहरण हमें ''लालपान की बेगम'' कहानी में दिखाई देता है– ''बिरजू की मां लाल पान की बेगम की नायिका को गांव की साधारण औरतें ईर्ष्या की दृष्टि से देखती है। क्योंकि उस की हालत आजकल बहुत सुधर गई है।

इसी का दूसरा पक्ष है गरीबी से सामना करने की समस्या जब गांव में काम करने से कुछ नहीं मिलता है तो ग्रामीण कामगार शहर की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। 'लालपान की बेगम' कहानी में जिस परिवर्तन की सूचना है वह सामान्य नहीं है। गांव के लोग कई प्रकार की सुविधाओं से वंचित ही रह जाते हैं शहर की तरफ उनका प्रस्थान अधिक यथार्थ ग्राही है क्योंकि उस में उनकी मजबूरी है।

मौसम की दो प्रतिक्रियाएं– सूखा और बाढ़। इनका भार गरीब लोगो को ढोना पड़ता है इसका सूक्ष्म वर्णन अपनी कहानियों में रेणुजी ने किया है पर यह सजह वर्णन नहीं अपितु तकलीफों का स्पष्ट सिलसिला है– ''दूर–दूर तक गेरूआ पानी–पानी–पानी। बीच बीच में टापुओं जैसे गांव, घर? घरों और पेड़ों पर बैठे हुए लोग। वह वहां एक भैंस की लाश, डूबे हुये पाट और मकई के पौधों की फुनगियों के उस पार .....। कुछ कहानियों में रेणु जी ने सुधरी हुई परिस्थितियों का वर्णन भी किया है। ''भितिचित्र की मयूरी'' नामक कहानी में प्रभादेवी–फुलपतिया की मां – नामक ग्रामीण कलाकार की सुधरी हुई हालत का चित्रण किया गया है। पहले वह जिनगी भर शुभलाभ और परब– पावन के समय गांव के लोगों की भित पर फूलपत्ती के बीच देवी देवता लोगों की मूरती बनाती थी ...... पटना से आने वाले एक व्यापारी के कारण उनकी कला का प्रचार हो गया ग्रामीण कलाकारों को मिलने वाली सरकारी सहायता के तहत अनुदान प्राप्त हुआ और अब पटना और दिल्ली कलकत्ता से चुनी गई लड़कियां ट्रेंनिग लेने आने लगीं ।

ग्रामीण जीवन के चित्रण में भूमि समस्या प्रमुख होती है छोटे बड़े किसानों के बीच कृषि भूमि को लेकर हमेशा टकराहट होती रहती है लेकिन जो छोटे होते हैं आघात उन्ही पर पड़ता है। ऐसी घटना का चित्रण रेणु जी ने अपनी कहानी ''तबे एकला चलो रे'' में प्रस्तुत किया है।

ग्राम्यांचल का वृहद अंकन रेणुजी की कहानियों में हुआ है। गांव हो रहे हर बदलाव की और उन्होंने संकेत किया है। आपकी रचनाओं में ग्रामीण व्यक्तियों का चरित्र उभरकर आता है जो कि ग्राम्य अस्मिता का अभिन्न अंग है। रेणुजी ने ऐसे पात्रों की परिकल्पना की है जिनके माध्यम से की सूक्ष्म पृष्ठभूमि खुल जाये ''मारे गए गुलफाम उर्फ तीसरी कसम'' के हिरामन और हीराबाई, ''एक आदिम रात्रि की महक'' का करमा, ''दिल बहादुर राय'' का दिलबहादुर, ''विघटन के क्षण'' की विजया, ''लाल पान की बेगम'' की बिरजू की मां, ''आत्म साक्षी'' का गनपत।

''मारे गए गुलफाम'' उर्फ ''तीसरी कसम'' रेणुजी की बहुचर्चित कहानी है। आंचलिक कहानी की मानक रचना के रूप में यह पढ़ी जाती है इस कहानी में हिरामन का चरित्र ही प्रमुख है। हिरामन के व्यक्तित्व के साथ ही पूरा गांव कहानी में जीवंत हो उठा है। इसलिये ये पूर्णतः आंचलिक रचना है। गाड़ीवान हिरामन चालीस साल का हट्टा कट्टा, काला–कलूटा युवक है उसकी शादी बचपन में हो गई थी और गौने से पहले दुल्हन मर गई। अब वह गाड़ीवान है। अपनी गाड़ी में माल लादकर कई दिनों तक इधर उधर जाना पड़ता है। मेले में भाग लेने जाये तो हफ्तों तक घर से दूर रहना पड़ता है। हिरामन इस बार फारबिसगंज शहर के मेंले में भाग लेने के लिए मथुरा मोहन नौटकीं कंपनी में लैला बनने वाली हीराबाई को अपनी गाड़ी में ले जाता है। दोनों में परिचय होता है तो हीराबाई को लगता है हिरामन सचमुच हीरा है। हिरामन भी हीराबाई के सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है लेकिन सच्चे प्रेम के विषय में दोनों का जीवन रेगिस्तान है। जीवन में प्रेम का सोता दबा पड़ा है और अवसर पाते ही वह बेग से एक दूसरे की ओर दौड़ पड़ता है– यह इस कहानी की मार्मिक पृष्ठभूमि है। यह कल्पनाओं और किताबी प्रेम भाषाओं से भिन्न है और अनोखी है। जहां जितनी अनोखी है उतनी ही वास्तविक है। हिन्दी कथा कथा साहित्य में विरले ही ऐसे पात्रों का चित्रण हुआ है। दोनों उपेक्षित है इसलिए एक दूसरे की तरफ आकृष्ट होते हैं– ''सब तरफ से उपेक्षित हिरामन जैसा व्यक्ति हृदय से और आचरण से कितना सुन्दर है, इसके पहचान की निगाह हीराबाई के पास ही हो सकती है जो खुद बेपहचानी, आनात्मीय समाज तंत्र में फालतू और निरर्थक है। इतनी सुन्दर और कलानिपुण होने पर भी हीराबाई को अपना कहने के लिए कोई नहीं था लेकिन हिरामन को मिलने पर वह नौंटकी कम्पनी के बहादुर से कहती है– ''देखो बहादुर इस को पहचान लो। यह मेरा हीरामन है। समझे।'' इस कहानी में दो निरीह ग्रामीणों की मनः स्थिति को प्रस्तुत किया गया है।

आदिम रात्रि की महक का करमा रेणु की श्रेष्ठ परिकल्पना है। रेलवे के गोपाल बाबू को असाम की कुलीगाड़ी से बिना बिल्टी रसीद का लावारिस माल के जैसे करमा मिलता था। उन्होंने रेलवे अस्पताल से छुड़ाकर अपने साथ रखा। वे जहां जाते करमा को भी साथ ले जाते, जो खाते करमा भी खाता। इसी प्रकार पांच वर्ष तक गोपाल बाबू के साथ रहा। बाद में कई रेलवे बाबुओं के साथ वह रहा। वह किसी से मजूरी नहीं लेता था। करमा को जीवन में वह स्नेही परिवार कभी नहीं मिला। जिसका उसके जीवन में एकदम अभाव था करमा रेणु जी स्नेह की आकांक्षा

रखने वाला परिकल्पना है।

''आत्मसाक्षी'' नामक कहानी का गनपत पैंतीस साल से अपने तन–मन–धन से पार्टी सेवा कर रहा था। परिवार जाति धर्म समाज सरकार और हर अन्याय, अत्याचार से हमेशा लड़नेवाला लड़ाकू गनपत, ''पैतीस साल तक साधु सन्यासियों की तरह लंगोट बंद रहकर, जीभ मुंह और मन में लगाम लगाकर उसने पब्लिक का काम किया ....।

रेणु ने अपनी कहानियों में सभी सभी पात्रों को उनकी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ चित्रित किया है। यथार्थता के जीवन की प्रस्तुति में जीवन की आद्रता छलक जाती है भले ही यह पूर्णिया और आसपास के क्षेत्र से संबधित हो लेकिन रेणुजी ने उसे सार्वजनिक प्रासंगिकता प्रदान की है। आपकी ग्रामीण स्त्री पात्रों में मारे गए गुलफाम उर्फ तीसरी कसम की हीराबाई, तीर्थाटक की लल्लू की मां, विघटन के क्षण की विजया और चुरमुनिया, लालपान की बेगम की बिरजू की मां नैना जोगिनी की रतनी प्रमुख हैं।

(तीसरी कसम) की हीराबाई रेणु के अविस्मरणीय पात्रों में से एक है। वह देखने में सुंदर है और कुशल नर्तकी भी है लेकिन समाज की व्यवस्था के कारण उसे अपमान और अनात्मीयता ही मिलती है। आत्मीयता की भूख उस में बनी रहती है। उसे ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जिसे उसे अपना कह सके। लेकिन इस बार की बैलगाड़ी यात्रा में वह हिरामन के हृदय और आचरण को पहचानती है।

हीराबाई, हीरामन को ''मीता'' कहकर पुकारती है। वह हिरामन की यथासम्भव सहायता करती है इन सबके बावजूद उनका वह आत्मीय संबध टूट जाता है। इन संबधों में दोनों के बीच लगाव और आर्द्रता को बड़ी सहजता से दिखाया गया है।

रेणुजी रचनाओं में तीर्थोदक कहानी की पात्र लल्लू की मां जैसी सेवारत नारियों का चित्रण किया गया है। वह गंगा स्नान करने को , अपने जीवन की संचित अभिलाषा की पूर्ति के लिए गांव के तीर्थ यात्रियों के साथ बनारस पहुंच जाती है। वह अचानक बीमार पड़ जाती है अतः वह दुखी है। काशी के ब्राहमण भोला जी पंडे की बेटी अन्नू दिन रात सेवा करती है। इस कहानी में ग्रामीणों की तीर्थ यात्रा का विशद वर्णन कर रेणु जी ने उनके रंग ढंग का सूक्ष्म चित्र प्रस्तुत किया है। आदर्श स्थापना की इच्छित भावना से प्रेरित न होने के कारण लल्लू की मां को, उसके विशालमन को, ग्रामीण परिवेश को समझने तथा आत्मसात में पाठकों को दिक्कत नहीं होती है।

रेणु की कहानियों के ग्रामीण पात्रों गांवो की वास्तविकता को चित्रित करते हैं। इन पात्रों के माध्यम से पूरे गांव की जीवतंता को चित्रित करते हैं। लालपान की बेगम की नायिका बिरजू की मां बहुत ही कार्यकुशल स्त्री है। वह अपने पति को दिन रात प्रेरणा देती रहती है। उसकी इस कुशलता के कारण ही उनके पास तीन बीघा जमीन है उसके इस गुण के कारण उसका पति उसकी सारे बातें मानता है, जिससे गांव की स्त्रियाँ उसे ईर्ष्या से देखती है। वह चाहे जुबान की तेज हो पर हृदय भी निर्मल है। वह गांव के सभी स्त्रियों के साथ में मेला देखने जाती है। बिरजू की माँ पर केन्द्रित यह कहानी एक ग्रामीण महिला के भोलेपन की कहानी है। वह कार्य कुशल और व्यवहारिक है। लड़ाकू है तो सहनशील भी है। इन पात्रों के द्वारा रेणु जी ने स्थानीय संदर्भ को उभारा है। ''अच्छे आदमी'' कहानी में नायिका सीता इतनी कार्यकुशल है कि चाय की दुकान चला कर आर्थिक उन्नति कर लेती है। ''नैना जोगिन'' कहानी की में रतनी एक साधारण औरत की व्यथा रेणुजी ने चित्रित किया है।

रेणु के अन्दर सवेंदनशील कलाकार है। वह अपने आस पास की दुनियां को देखता और परखता है। यह कलाकार निपट ग्रामीण है। रेणु के अंदर निहित इस कलाकार ने अपने ग्रामीण सहजातीय कलाकारों को भी खोज निकाला है। 'रसप्रिया', 'ठेस', 'तीन बिंदियां', 'भित्ति चित्र की मयूरी', 'एक रंगबाज गांव की भूमिका', 'कपड़ घर', 'एक लोक गीत का विद्यापति' तथा 'टौंटीनयन का खेल' कहानियां ग्रामीण कलाकारों में जीवन की वास्तविकता को दर्शाते है।

रसप्रिया कहानी में पंचकौड़ी मिरदंगिया इसका प्रमुख पात्र है। पहले वह विद्यापति का पद गाकर नाचा करता था तथा मृदंग बजाता था। उसकी एक प्रसिद्ध बिदापत नाच की मंडली थी। समय के साथ मंडली टूट गई मिरदंगिया की ऊंगली टेढ़ी हो गई। वह अधपागल हो गया है। इधर उधर बाबुओं के घरों में घूम फिर कर मृदंग

बजाता गाता है उसकी हालात बुरी है। रसप्रिया गाने वाले मोहना नामक चरवाहे को देखने पर मिरदंगिया बहुत खुश होता है क्योंकि वह कई वर्षो से विदापत नाच में नाचने वाले नटुआ की खोज कर रहा है। उसके लिए हर प्रकार के योग्य लड़के को देखकर मिरदंगिया का कला हृदय बहुत प्रसन्न होता है। लड़के की बीमारी के इलाज के लिए, अपनी वर्षो की कमाई उसे दे देता है। मोहन रमपतिया का पुत्र है। अपने गुरू की बेटी रमपतिया के साथ उसने प्रेम किया था लेकिन बाद में उसे भी धोखा दिया। मोहन बांसुरी में रसप्रिया बजाता है जिसे पंचकौडी मृदंग में बजाया करता था।

रमपतिया की स्मृतियां, मोहन का सुडौल रूप सब मिलकर पंचकौडी के सामने जीवन का एक घनीभूत क्षण साकार कर देते हैं परन्तु वह उसे प्राप्त नहीं कर सकता। उसका जीवन उसके सुंदर क्षण नष्ट हो चुके हैं लेकिन उसके अंदर का कलाकार जीवित है, मोहना को सबकुछ देते हुए रसप्रिया के आलापों की मधुर स्मृतियां उसके मन में घूमती रहती है।

ठेस कहानी का नायक सिरचन की ग्रामीण कलाकार है। केवल पेट भर भोजन मिलने पर ही वह रंगीन शीतलपाटी, चिक, कुश की आसनी बनाता है। भोजन में कुछ कमी होने पर वह क्षमा कर सकता है लेकिन बात में जरा भी झाल वह नहीं बर्दाश्त कर सकता। एक बार छोटी बहन मानू के ससुराल ले जाने के लिए सिरचन चिक बना रहा है चाची में कड़े शब्दों से सिरचन के आत्मसम्मान को ठेस लगी।

वह काम अधूरा छोड़कर आ जाता है बेचारी मानू दुखी होती है। सिरचन के हृदय में ठेस लगती है। वह सरल चित्त वाला है उसका स्नेह मानू के लिए है उसके लिए वह अपने आत्मसम्मान को छोड़ देता है। आत्मसम्मान और स्नेह के बीच संघर्ष में स्नेह जीत जाता है। मानू के लिए सभी चीजें बनाकर तैयार कर लेता है। मानू ससुराल जाने के लिए गाड़ी में बैठी है,तब रेल गाड़ी की खिड़की के पास खड़े होकर सिरचन ने मानू से कहा, ''यह मेरी ओर से है सब चीज है दीदी। शीतल पाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी कुश की। सिरचन के कारूणिक चित्रण के साथ रेणु जी ने इस कहानी का अंत किया है। सिरचन का परिवेश उसके कलाकार व्यक्तित्व को महत्व देने वाला नहीं है। सिरचन स्नेह का भूखा है इस लिए अपने आत्मसम्मान भी परवाह किये बिना स्नेह के लिए जीता है।

गरीबी के वाबजूद रूपये पैसे के लोभ मोह पड़कर गांव छोड़ने को भित्ति'' चित्र की मयूरी'' नामक कहानी की प्रभादेवी नामक ग्रामीण कलाकार तथा उसकी बेटी फूलपतिया तैयार नहीं होती है। इस कारण उस कला को सीखने के लिए दूरदूर के शहरों से भी लड़कियां आ उस गांव में रहने को तैयार हो जाती है। इस कला के व्यापार तथा उसे लाभ उठाने वाले लोगों को भी मां बेटी पराजित कर देती है और अपनी कला को पुनः जीवित रखने में समर्थ निकलती है।

''एक लोक गीत का विद्यापति'' नामक कहानी में कनचीर गांव के विद्यापति और नाच संघ की कोइला नामक विधवा युवती की कथा है। ''टौटींनायन का खेल'' में कीर्तन करने वाले सुमरचंद और मूर्तियां बनाने वाला दुर्गालाल तथा मूर्तियों को आंख देने वाली बसु की बहन तथा उससे संबधित अंधविश्वासों की कहानी ''कपड़ घर'' में है। ''तीन बिंदिया'' नामक कहानी में कला के सच्चे उपासक हराधन मिश्री का चित्र है। वह गरीबी में अपने आत्मसम्मान को महत्व देता है। उसके आदेशानुसार गीताली ठुमरी गायन में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लेती है।

इन ग्रामीणों कलाकारों के जीवन चित्रण से लोक चेतना का आभास प्राप्त होता है। इन कलाकारों के माध्यम से रेणु ने आंचलिक वातावरण सुदृढ बना दिया है।

रेणु जी सभी कहानियां यर्थाथवादी है। ग्रामीण जीवन का यथार्थ और उसके विविध पहलू ही उनकी आत्मसत्ता है। आर्थिक कठिनाइयों से जूझने वाले किसानों, गांव के स्थानीय कलाकार बातूनी औरतें, सेवारत नारियों के चित्र आपकी रचनाओं में सर्वत्र व्याप्त है। आपकी रचनाओं में ग्रामीण परिवेश कृत्रिम न होकर ग्राम्य जीवन की मूल संरचना से जुड़ कर प्राकृतिक (नैसर्गिक) सौन्दर्य के साथ परिपुष्ट हुआ है।

ग्राम्य जीवन को दर्शाने के लिए ग्रामीण संस्कृति और जीवन रीतियों का वर्णन आवश्यक है। रसप्रिया कहानी में विद्यापति मंडली की प्रसिद्दि तथा समय के साथ उस कला के ह्वास को बताया गया है। लाल पान की बेगम

में बिरजू की मां के चरित्र के द्वारा ही ग्राम्य जीवन की विशेषताएं प्रकट हो जाती है। एक तरफ स्त्रीयोचित मानसिकता दूसरी तरफ गांव के रीति रिवाज नाच गानो के प्रति लगाव, मेले पर्वो के प्रति ,उत्सव त्योहारों के प्रति गांव वालो की सहज प्रीति होती है। ये सब गांव वालों के जीवन के अंग हैं। किसानों के जीवन के चित्र आपकी कहानी ‘‘सिरपंचमी के सगुन‘‘ में चित्रित है। यहां बात अंधविश्वास की नही बल्कि आस्था की है। ‘‘विघटन के क्षण‘‘ में रानीडिह गांव के शाम चकवा पर्व का वर्णन है। मारे गये गुलफाम मे फारबिसगंज में नौटंकी देखने के लिए आने वालो का और उस पूरे मेले का वर्णन किया गया है। ग्राम्य जीवन की बात हो और आस्था विश्वास की न हो तो कुछ अधूरापन रह जाता है रेणु जी ने अपनी कहानियों में ग्रामीणों के आस्था विश्वास का चित्रण बड़े ही सरल तरीके से किया है ताकि आंचलिकता का पुट बना रहे। पंचलैट कहानी में पंचलाइट को जलाने का उपाय न सूझने पर कई प्रकार के वाद–विवाद होते हैं।

रसप्रिया में पंचकौडी की ऊंगलियों में टेढें हो जाने की बात को लेकर जो विश्वास पंचकौडी और रमपतिया के हृदय में बस गया है वह पूरी कहानी को रचनात्मक दिशा प्रदान करता है।

कई संदर्भो में अंधविश्वासों का भी चित्रण है पर उनके पात्र उसे अपनाते हैं। नदी में बाढ़ आने पर उसे प्रसन्न करने के लिए नदी की वंदना करना। कौऐ को अशुभ और असगुन का वाहक मानना। मेले के लिए तैयार मूर्तियों को आंख देने पर आंख बनाने वाला कलाकार अंधा हो जायेगा इसी विश्वास का चित्रण 'कपड़ घर' कहानी में भी किया गया है।

ग्राम्य जीवन का सार होते है लोकगीत। इन गीतों के बिना ग्राम्य जीवन की कल्पना ही नीरस हो जायेगी। अपनी कई कहानियों में रेणु ने लोकगीतों को प्रस्तुत किया है। कभी कभी ये गीत कहानी के प्राण लगते हैं और कहानी की मूल संवेदना के सूचक भी हैं।

मारे गये गुलफाम का महुआ घरवासि का गीत

हूं–ऊँ–ऊँ रे डाइनिया मइया मोरी .. ई..ई
नोनवा चटाई कोह नाहिं भरलि सौरी ..... घर ..... आ .... आ
एहि दिनवां खातिर छिनरो धिया
तेहुं पोसलि की नेनू दुध उटगन ....।

जानबूझकर लोकगीतों का प्रयोग करके कहानियों में कृत्रिम आंचलिकता को बढ़ाने का प्रयास रेणु जी ने नही किया है। लोकगीत अपने कहानियों के पात्रों के जीवंत परिवेश का हिस्सा है। उचित प्रंसगो पर आधारित लोकगीत पूरी रचना को बदल डालते हैं।

आंचलिकता का पहला नियम ही है ग्रामीण भाषा का प्रयोग। आपकी समस्त कहानियां ग्राम्य भाषा के सीधे सरल प्रयोग पर आधारित है। आपने अपने आसपास के परिवेश अपनी भाषा को अपनी ही शैली में इन कहानियों में सजीवता के साथ प्रयोग किया है।

निष्कर्ष

रेणु ग्रामीण जनजीवन के यथार्थ के कथाकार है रेणु की आत्मा गांवों में बसती है। आपने गांव के हर पक्ष को चाहे वह गरीब किसान हो, मजदूर हो या फिर जमींदार उनके हावभाव या उसके अन्दर की भावनाएं और दूसरे के प्रति उसका दृष्टिकोण रखते हैं। इसका पूर्ण रूप प्रस्तुत करते हुये समाज के यथार्थ की ओर संकेत करते है। रेणु ने ग्रामीण समाज के कोने–कोने में झांककर वहां के यथार्थोन्मुख दशा व दिशा को अपनी लेखनी के माध्यम से प्रकट किया है। फणीश्वरनाथ रेणु उन थोड़े से कथाकारो में अग्रणी हैं जिन्होने भारतीय ग्रामीण जीवन का उसके सम्पूर्ण आंतरिक यथार्थ के साथ चित्रण किया है। इसमें ग्रामीण समाज में लोक संस्कृति एवं लोकगीतों का धीरे–धीरे ओझल होते जाना, ग्रामीण समाज के भविष्य के प्रति चिंता, ग्रामीण समाज में जीवित आत्मीयता, स्त्री जीवन, रिश्तों में एकता का भाव आपसी द्वेष, प्रेम प्रसंग, लोक परम्परा का महत्व, अंचल विशेष का वर्णन आदि सभी

को देखा जा सकता है। रेणु अपनी कहानियों में ग्रामीण समाज में मनुष्य के राग, विराग और प्रेम को, दुख और करूणा को, हास उल्लास और पीड़ा को एक साथ लेकर चलते नजर आते हैं। फणीश्वरनाथ रेणु ग्रामीण समाज के टूटते बिखरते और जीवित मानवीय सम्बन्धो के कथाकार हैं।

सन्दर्भ सूची

सम्पूर्ण कहानियां : फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

****